क्रियायोग आश्रम व अनुसंधान संस्थान

संचालन द्वारा: योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति
संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569 243
मोबाइल: 9415217277/81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर. ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेल: kriyayoga.canada@yahoo

बेवसाइट: kriyayoga-yogisatyam.org

क्रम संख्या .....

प्रकाशनार्थ

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है
दिनाँक :

गंगा तव दर्शनात् मुक्ति ...

क्रियायोग की साधना से विकार रहित अवस्था को प्राप्त करना अन्तरगंगा को प्रकट करना है । -स्वामी श्री योगी सत्यम् जी

13 फरवरी, 2013 इलाहाबाद । ''ईश्वर में भक्ति को प्रदर्शित करने के लिए लाखों लाखों श्रद्धालु माघमेला व कुंभमेला पर्व तीर्थ के अवसर पर इकट्ठा होकर अपनी समझ के अनुरूप पूजा, अर्चना, तप, ध्यान व योग आदि पावन कर्म का संपादन मानव जाति के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और आवश्यक महायज्ञ है । भविष्य में यह आध्यात्मिक जागरण मानव को आवश्यकता के अनुसार द्रुत गति से विकसित होने में सहायक होगा । माघमेले में 70-90 लाख व कुंभमेले में 3 से 4 करोड़ के भीतर जो लोग इकट्ठा होते हैं वे ही भविष्य में सच्ची आध्यात्मिकता के मार्ग का अनुसरण करके पूरे राष्ट्र को जागत कर विश्व के सभी राष्ट्रों को एक सूत्र में बाँधने व उनमें सर्वांगीण सम्पन्नता के सृजन में सहायक होंगे । इलाहाबाद कुंभ मेले क्षेत्र में विविध प्रकार के मानव का अलौकिक समागम पूरे पृथ्वी पर राम राज्य स्थापित करने की मौलिक शक्ति विद्यमान है । भविष्य में माघमेले व कुंभमेले का महत्व और अधिक बढ़ेगा और इसी तरह का मानव समागम पृथ्वी के अन्य स्थानों में हुआ करेगा ।'' उक्त विचार अन्तराष्ट्रीय क्रियायोग वैज्ञानिक स्वामी श्री योगी सत्यम् महाराज जी ने मुक्ति मार्ग पर सेवारत क्रियायोग सत्संग शिविर में आयोजित क्रियायोग कार्यक्रम में व्यक्त किया ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् महाराज जी ने आगे कहा कि पावन गंगा के पावन रेती पर बैठकर मनुष्य को

अपने अन्तःकरण में पावन गंगा के पावन जल की तरह विकार रहित स्थिति प्रकट कर लेना, गंगा तव दर्शनात् मुक्ति की स्थिति है । इस स्थिति के प्राप्त होने पर ही गंगा की धारा में डुबकी लगाना चाहिए । इस प्रकार पावन गंगा में स्नान करके हम गंगा की महिमा को पूरी तरह प्रकाशित करने में सफल हो जाते हैं । जब भक्त या साधक अन्तःकरण को विकार रहित स्थिति को प्राप्त किये बिना जब गंगा की पावन धारा में स्नान करते हैं तो वे अपने अंदर सच्ची मानवता व आध्यात्मिक शक्ति को विकसित करने में सफल नहीं हो पाते हैं, ऐसी स्थिति में गंगा की पवित्रता के गुणों को हम पूरी तरह समझ नहीं पाते हैं । बार-बार प्रश्न उठता है कि लोग रोज गंगा में विधिवत् डुबकी लगाते हैं लेकिन फिर भी उनके विचारों और भावनाओं में उचित परिवर्तन नहीं होता है ।

अन्तःकरण को विकार रहित करने की विधि पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए स्वामी सत्यम् महाराज जी ने स्पष्ट किया कि क्रियायोग की साधना से मानव का अन्तःकरण पूरी तरह विकार रहित हो जाता है। उसके अंदर कभी भी और किसी भी वैक्टीरिया और वाइरस की उपस्थिति से बीमारी, सड़न-गलन आदि नहीं होता है । क्रियायोग साधना को अच्छी तरह अभ्यास कर अन्तःकरण में विकार रहित स्थिति उत्पन्न कर लेने पर मानव के अंदर गंगा की अलौकिक धारा बहने लगती है । ऐसी स्थिति में जब मनुष्य गंगा की पवित्र धारा में डुबकी लगाता है तो उससे लोक और परलोक, दृश्य और अदृश्य ब्रह्माण्ड का पूर्ण ज्ञान हो जाता है । इस स्थिति के प्राप्त होने पर राष्ट्र की सम्पूर्ण व्यवस्था स्वतः विकासोन्मुख और परमकल्याणकारी हो जाती है ।

मुक्ति मार्ग पर स्थित क्रियायोग शिविर के भव्य पण्डाल में भारत के अनेक प्रदेशों से आये हुए भक्तों के साथ–साथ अमरीका, कनॉडा, ब्राजील, रूस, गयाना, सिंगापुर, पोलैण्ड, आस्ट्रेलिया, फिनीलैन्ड, साउथ अफ्रीका, जर्मनी, इटली, लंडन आदि देशों से आये हुए साधक भारी संख्या में भाग लेकर शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं ।

क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन कुम्भ मेला क्षेत्र में काली मार्ग पर प्रातः 6:30 से 7:30 बजे तक, कुम्भ मेला में मुक्ति मार्ग पर प्रातः 8 बजे से 10 बजे तक तथा दोपहर 2:30 बजे से सायं 6 बजे तक और मोरी रोड पर महर्षि पतंजलि धाम परिसर में रात्रि 11 बजे से 1 बजे तक हिन्दी तथा अॅग्रजी भाषा में बडे ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है ।

– योगमाता